मार्टीनस का ब्रह्मांड विज्ञान

जीवन का एक आशावादी दृष्टिकोण

tkfu, Lo;a dk

जब तक हमारा जीवन रहस्यमय है तब तक ब्रह्मांड की यह 'पहेली' भी रहस्यमय बनी रहेगी। ब्रह्मांड विज्ञान अपनी संपूर्णता में हमें अपने से और हमारे होने मात्र की स्थितियों से हमारा साक्षात्कार कराता है। विश्व की इस तस्वीर का उद्देश्य है स्वयं को जानिए जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड को जान सकें।

cãkM ,d pru rRo g

ब्रह्मांड के बारे में मार्टीनस का मूल विचार है कि यह चेतन है और सोचता है। ब्रह्मांड संपूर्ण जीवित तत्वों का मेल है जो सभी मिलकर 'एक' इकाई के रूप में काम करते हैं। सभी जीवित प्राणी एक साथ मिलकर एक अखंड, अनंत स्वरूप प्राणी का निर्माण करते हैं। धर्म के माध्यम से हम इस अखंड, अनंत स्वरूप को 'ईश्वर' के नाम से जानते हैं। यह संपूर्ण अस्तित्व, यह समस्त जीव एक अविभाज्य इकाई है। एक विधि-नियम के अंतर्गत प्रत्येक के संग पूर्ण सामंजस्य के साथ जीने की क्षमता धीरे-धीरे विकसित होगी। अन्ततः हम ब्रह्मांड की सचेतनता को प्राप्त करेंगे। हम 'जीवन के संग एक रूप' हो जाएंगे। हम जीवन जगत के कानूनों का पालन करेंगे और अपने पड़ोसियों से अपने जैसा प्रेम भाव रखेंगे।

dkbZ èke ugh] lnL;rk ugh

मार्टीनस का ब्रह्मांड विज्ञान कोई धर्म नहीं है। मार्टीनस के ब्रह्मांड विज्ञान का कोई सदस्य नहीं हो सकता। ब्रह्मांड विज्ञान संपूर्ण अस्तित्व की व्याख्या करता है। यहां की हर वस्तु और हर व्यक्ति पहले से ही इस संपूर्ण का सदस्य है। मार्टीनस यह नहीं चाहते कि अंधविश्वासियों का एक झुंड उनका अनुसरण करे। वे यह नहीं चाहते कि उन्होंने जो लिखा है सब उस पर आंख मूंद कर विश्वास करें। वे यह चाहते हैं कि हम अपने निजी

अनुभवों की कसौटी पर कस कर पता लगाएं कि उनका लिखा वास्तव में यथार्थ के अनुसार है या नहीं।

मार्टीनस किसी खास नैतिक मानदंड का आग्रह नहीं करते। वे यह दिखाते हैं कि जीवन किस तरह से खुद के उच्चतर नैतिक मानदंड हमारे दिलो-दिमाग पर लिखता चलता है। मार्टीनस ने विश्लेषण के माध्यम से जीवन के अस्तित्व की बुनियादी स्थितियों को समझाने के लिए आध्यात्मिक विज्ञान सृजित किया है। सत्य सार्वजनीन और सर्वकालिक होता है।

thou dk cãkMh; nf"Vdk.k

अपने लेखन में मार्टीनस ने जीवन के नए, ब्रह्मांडीय दृष्टिकोण से परिचित कराया है। उन्होंने पृथ्वी पर हमारे भौतिक जीवन की लघुता को ब्रह्मांड के क्रमिक विकास के संदर्भ में देखा है। जीवन शाश्वत है, इसे समझने के लिए हमें जीवन को उसकी शाश्वतता के परिप्रेक्ष्य में ही देखना होगा।

i'k| l okLrfod eu";

जीवन के क्रमिक विकासात्मक दृष्टिकोण से मनुष्य अत्यन्त विकसित पशु मात्र है। यह बहुत पहले से ही व्यापक रूप में स्वीकारा जा चुका है। विकासात्मकता के अन्तर्गत नया विचार मार्टीनस द्वारा यह दिया गया कि एक व्यक्ति के रूप में हम इस पूरी प्रक्रिया में हिस्सा लेते हैं। हम परिवर्तन के दौर में हैं और इसलिए आंशिक रूप में पशु व मनुष्य दोनों हैं। हम नरसिंह स्वरूप वाले हैं। पशुता के अन्तर्गत हमारी स्वार्थी प्रवृत्तियां अपने अस्तित्व के संघर्ष को नाना स्वरूप देती रही हैं। एक समय उनकी आवश्यकता थी लेकिन अब ऐसा नहीं है। मनुष्य की यह जन्मजात पाशविक प्रवृत्ति संपूर्ण मनुष्यता के अस्तित्व पर खतरा बन कर मंडरा रही है। विकास के संघर्ष में स्वार्थीपन स्वतः एक चरित्रगत विशेषता बन गया । यह अचेतन रूप में हमारे लक्ष्यों को हासिल करने के लिए की जाने वाली गतिविधियों को निर्देशित करता है, जो असल में हमारे उन्नयन के लिए ही होता है। हमारे अन्तर्मन में हमारी पूर्व पाशविक मानसिकता और नई उगती मानवीय चेतना के बीच संघर्ष चलता रहता है। हमारी ब्रह्मांडीय नियति पूर्ण मानव बनने की है जिसके जीवन का आधार निःस्वार्थ भावना और आस-पड़ोस के प्रति सही और सच्चा प्रेम भाव है।

viuh fu;fr d fuekrk ge Lo;a gh

लोग अलग-अलग तरह की तकदीर का अनुभव क्यों करते हैं? जिन बातों में हमारा कोई दोष नहीं है, उनके लिए हमें इतने कष्ट क्यों उठाने पड़ते हैं? जब तक हम शाश्वतता के बारे में अंधे बने रहेंगे, हम अपने प्रारब्ध का कोई ठोस कारण नहीं देख पाएंगे। हम यह नहीं जानते कि हमारा वर्तमान भौतिक जीवन किसी बृहत्तर योजना की एक कड़ी है जो एक निरंतर क्रमिक विकासात्मक पद्धति से जुड़ा हुआ है। इसलिए हम यह नहीं देख पाते कि हमारा वर्तमान जीवन हमारे अपने ही सोच व व्यवहार का परिणाम है। इसी तरह हम देखते हैं कि हमारे आज के विचार और क्रियाएं भविष्य का ताना-बाना बुनते हैं।

मार्टीनस जीवन की शाश्वत संरचना की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि मृत्यु कहीं नहीं है। हम अपने आसपास उपकरण और जीव देखते हैं न कि जीवन। उपकरणों का बारंबार पुनर्निर्माण किया जाता है और तोड़ दिया जाता है। स्रोत, जो स्वयं जीवन है, अपने आप में शाश्वत है।

हमारे पास भौतिक और आध्यात्मिक उपकरण हैं। हम दो प्रकार के जगत में रहते हैं – एक भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक। फिर भी हम केवल भौतिक जगत के प्रति ही सचेतन रहते हैं इसलिए हमारी नियति एक रहस्य है। मार्टीनस के अनुसार हम अपनी नियति के निर्माता स्वयं हैं क्योंकि यह, हम क्या सोचते और करते हैं, पर निर्भर करती है। हमारी नियति, हमारा भविष्य हमारे अपने ही हाथों में है। हमारी अपनी ही अंतरात्मा में सुषुप्त शक्तियां हैं जो स्वयं के उपयोग की प्रतीक्षा में हैं।

ihMk dk mís';

क्या सांसारिक पीड़ाओं का कोई उद्देश्य है? जी हां। मार्टीनस के अनुसार पीड़ा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। यह हमें बदलती है और धीरे-धीरे हमारे भीतर सहानुभूति और मानवीयता का सृजन करती है। जंगल राज्य के नियम 'हर व्यक्ति स्वयं के लिए' का अटल परिणाम है पीड़ा। किसी भी जीव की पीड़ा का कारण बनना नियति के नियम की अनभिज्ञता को दर्शाता है। मनुष्य जो बोता है, उसे ही काटता है। हम नहीं जानते कि हम क्या कर रहे हैं। लेकिन चूंकि हम वह काट रहे हैं जो हम बोते हैं, यह भाव हमें अच्छे और बुरे के बीच

फ़र्क करना सिखाता है। इस सिद्धान्त को आत्मसात करने का परिणाम होगा कि सद्व्यहार ही हमारा एकमात्र व्यवहार होगा।

D;k thou U;k; vk/kkfjr g\

यह विश्वास रखना महत्वपूर्ण है कि जीवन में न्याय सर्वोपरि है। समाज की न्यायिक व्यवस्था बेहतर न्याय की ओर बढ़ रही है। मार्टीनस के अनुसार ब्रह्मांड की व्यवस्था स्वयं ही हमारे अस्तित्व के शाश्वत नियम की गारंटी देती है और सभी परिस्थितियों और जीवन की घटनाओं में न्याय के रूप में उपस्थित रहती है। चूंकि कोई भी अपने ही कार्यों के परिणामों से इतर और किसी चीज का अनुभव नहीं करता, इसलिए कोई भी न्याय के असंगत पीड़ा नहीं भोग सकता। हमारे दुःखों का कारण हमारे कथित दुश्मन नहीं होते, वे हमारे अपने ही पहले के कर्मों और कभी–कभी पूर्व जन्मों के कर्मों के प्रतिफल के उपकरण भर होते हैं। सभी बुराइयों की जड़ हमारी अपनी अंतरात्मा में है। मार्टीनस के अनुसार मनुष्य अनजाने में ही अपना सबसे बड़ा दुश्मन बना हुआ है। चूंकि हमारी पीड़ा वही है जो हमने दूसरों को दी है इसलिए हम हर चीज के पीछे छुपे गुरुतर न्याय का आभास पा सकते हैं।

Hkfo"; d fy, ekuork dk lkefgd y{;

सभी परिवर्तन ब्रह्मांडीय नियमों पर आधारित हैं। इस मूलभूत नियम की समझ से भविष्य के सामूहिक मानवीय लक्ष्य को पहचानना संभव है। जिस तरह दिन और रात, गर्मी या सर्दी अपनी पूरी नियमितता से आते-जाते हैं, उसी तरह मानसिक प्रकाश के बाद मानसिक अंधकार, प्यार के बाद घृणा आते हैं। पृथ्वी पर क्रमिक विकास के अन्तर्गत ब्रह्मांडीय लक्ष्य है शांति के वैश्विक राज्य का निर्माण। विश्व के एकीकृत रूप का ज्ञान और एक अंतर्राष्ट्रीय न्यायिक प्रणाली का निर्माण विकास का एक चरण है। अपने ब्रह्मांड विज्ञान में मार्टीनस विश्व के क्रमिक विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियों को व्याख्यायित करते हैं।

इस तरह की वैश्विक स्थिति का सृजन तानाशाही से नहीं किया जा सकता बल्कि विकास के द्वारा ही हो सकता है। ब्रह्मांडीय विश्व परिदृश्य की अपनी तार्किक व्याख्या के आधार पर मार्टीनस बताते हैं कि पृथ्वी पर आपसी सद्भाव ब्रह्मांड के नियमों का परिणाम है। आपसी प्रेम बुद्धि और भावों का समरस सम्मिश्रण है। यह एक मानसिक स्थिति है जिसका ब्रह्मांड के मूल भाव 'प्रेम' के साथ पूर्ण तादात्म्य है।

ekVhul dku Fk

मार्टीनस डेनिश लेखक थे। 'द थर्ड टेस्टामेंट' उनकी संग्रहीत रचना है। उनकी मुख्य रचना है 'द थर्ड टेस्टामेंट–लाइवेट्स बॉग (द बुक ऑफ लाइफ)'। 'द इटर्नल वर्ल्ड पिक्चर' (चार खंडों में) उनके मुख्य काम का पूरक है। इसमें रंगीन प्रतीकात्मक ड्राईंग, व्याख्यापूर्ण आलेख एवं आलेखों को व्याख्यायित करते रेखाचित्र तथा उनके ब्रह्मांड विज्ञान के प्रमुख सिद्धान्तों की व्याख्या है। 'तर्क' 'लाइवेट्स बॉग' का परिचय है। उन्होंने लगभग 30 पुस्तिकाएं लिखी हैं।

मार्टीनस का जन्म 1890 में डेनमार्क के जटलैंड के उत्तर में स्थित एक छोटे से रेलवे शहर सिन्डल में हुआ और वे वहां 90 साल की उम्र तक रहे। मार्टीनस के कामों की पृष्ठभूमि में 'संचेतना के गंभीर' परिवर्तन का अनुभव है, जो मार्च 1921 में आया। 'लाइवेट्स बॉग की भूमिका में अपने इस अनुभव के बारे में मार्टीनस लिखते हैं:

> "अग्नि का ब्रह्मांडीय बॅपतिज्म, जिसमें से मैं गुजरा – जिसकी गहरी व्याख्या मैं यहाँ नहीं कर सकता – ऐसा प्रभाव छोड़ गया जिसने मुझे एकदम नई ऐन्द्रिक क्षमताएं दीं। इन क्षमताओं ने मुझे टुकड़ों में नहीं बल्कि इसके विपरीत *'एक जागृत स्थाई भाव की संचेतना के रूप में', समृद्ध किया। इसके कारण मैं उन सभी प्रमुख आध्यात्मिक ताकतों, अदृश्य कारणों, शाश्वत वैश्विक नियमों, बुनियादी ऊर्जाओं एवं आधारभूत सिद्धान्तों का, जो इस भौतिक विश्व के पीछे हैं, समझने में समर्थ हुआ। इस तरह से जीवन के अस्तित्व का रहस्य मेरे लिए अब रहस्य नहीं रह गया। मैं संपूर्ण ब्रह्मांड के जीवन के प्रति सचेतन हो गया और सृजन का दैवीय सिद्धान्त मेरे सम्मुख उजागर हो गया।"*

संचेतना का यह स्वरूप–परिवर्तन और इससे उपजी नई दृष्टि मार्टीनस के लेखकीय रूप का आधार बनी। वे 1921 से लेकर मृत्युपर्यंत, यानी 1981 तक लिखते रहे।

राल्फ़ इल्विंग (1985)

मेरी मैक्गवर्न द्वारा अंग्रेजी में अनूदित
विभा रानी द्वारा अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित
विनय आदित्य द्वारा सम्पादित

fn ekfVlu l bfULV';lV

फ्रेडरिक्सबर्ग, कोपेनहेगेन स्थित द मार्टीनस इंस्टीयूट ने 1981 के अंत तक मार्टीनस की सभी किताबें प्रकाशित कीं। तत्पश्चात बोर्गन्स के पब्लिशर्स ने उन्हें डेनिश में पुनर्प्रकाशित करने का जिम्मा ले लिया। इस संस्थान में शिक्षा एवं प्रशासनिक सुविधा के साथ-साथ एक पुस्तक भंडार भी है। प्रत्येक शरद ऋतु में यहां व्याख्यान, विभिन्न कोर्स और अध्ययन समूह चलते रहते हैं।

n ekVhlu l lVj

'द मार्टीनस सेंटर' की स्थापना 1935 में जीलैंड के उत्तर पश्चिमी तट पर स्थित क्लिट में हुई, जो कोपेनहेगेन से लगभग 60 मील दूर है। इसके फ्लैटों, कमरों, लकड़ी के घरों और कैम्पिंग साइट में लगभग 200 अतिथि ठहर सकते हैं। सभी फ्लैटों और घरों में खाना पकाने की सुविधा है। सेंटर में शाकाहारी रेस्त्रां भी है। सेंटर में मुख्य रूप से स्कैन्डेनेवियन अतिथि आते हैं। इसके अलावा दो हफ्ते का एक वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय ग्रीष्म कोर्स इंग्लिश और जर्मन-भाषियों के लिए होता है। वसंत और शरद में भी गैर स्कैन्डेनेवियनों के लिए सीमित संख्या में शिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय भाषा 'एस्पेरान्तो' भी यहां पढ़ाई जाती है।